सखी! देखो बसन्त आ रहा है

पुनीत आर्य

चिवँ चिवँ चिडिया चहचाहकर बोली, सुमन्त आ रहा है,
गंघियाँ लहराकर गीत सुनाती,सखी! देखो बसन्त आ रहा है ।

सांझ–सवेरे रूप सुनहरे, और दोपहर की हवा निराली,
मौसम को फगुनाकर बोली, माघ का अन्त आ रहा है ।
..... सखी! देखो बसन्त आ रहा है ॥
हरी है धरती, व्योम नीला, धवल कुहासा चीरता भगवा,
लगता है जैसे पुर्वेय्या से चलके, कोई महन्त आ रहा है
.....सखी! देखो बसन्त आ रहा है ॥
खिलती कलियां, मीठी खुशबू, रंगबिरंगी ढेरो तितली,
पकडने को दौडते नन्हे बच्चो पे, प्रेम अनन्त आ रहा है ।
.....सखी! देखो बसन्त आ रहा है ॥
बागो की बासन्ती खुशबू में, शकुन्तला सी उडती मैना,
टर्र–टर्रा के कह रही हो जैसे, उसका दुष्यन्त आ रहा है ।
.....सखी! देखो बसन्त आ रहा है ॥
धुन्ध कुहासा सब हट गये, तमस अब सारे मिट गये,
लगता है सूरज सा प्रकाश फैलाने, कोई संत आ रहा है ।
.....सखी! देखो बसन्त आ रहा है ॥

खडे है सब कतार में, करने को स्वागत, इन्तजार में,
हृदयो का उल्लास बढाने, लेके खुशियाँ अनन्त आ रहा है ।
.....सखी! देखो बसन्त आ रहा है ॥
.....सखी! देखो बसन्त आ रहा है ॥